International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

बघेलखंड की सांस्कृतिक धरोहर : कैथी लिपि।

डा. शिखा त्रिपाठी

ए के एस विश्वविद्यालय सतना

सार

भारत अपनी सांस्कृतिक धरोहर को सहेजे रहा है ।इसका इतिहास इतना समृद्ध है कि, यदि हम वर्तमान में विज्ञान मे भी देखे ।तो जानकारी हो सकती है। किंतु हम भारतीय आज पाश्चात्य के कारण अपने इतिहास के साथ वर्तमान को भूल रहे हैं ।विशेषता भारतीयों के महादेश में भौगोलिक विस्तार समेटा जा रहा है । और इसी तरह अपनी विरासत और संस्कृति भी विदा हो रही है ।हम कह सकते हैं हमारी संस्कृति के लिए पाश्चात्य सभ्यता व संस्कृति नासूर रोग के समान है, जिसका इलाज यदि समय रहते नहीं किया गया तो हमारा सांस्कृतिक अपक्षय हो सकता है । इससे पहले की हमारी संस्कृति रूपी शरीर का विनाश होने लगे ,इससे पहले हमें इसे विघटनकारी तत्व को समाप्त करना होगा ,और यह तब संभव है। जब हम अपनी सांस्कृतिक धरोहर का ध्यान रखेंगे ।इस विरासत को सहेज कर नई पीढ़ी में स्थानांतरण कर सकेंगे। यह कहना अधिक नहीं होगा कि, आज भारत में अनगिनत लोक भाषाएं एवं बोलियां हैं, जिनमें से कुछ ही भाषाएं जीवंत है । जिन्हें भाषा की प्रभुता के कारण संविधान की आठवीं सूची में शामिल कर लिया गया था और तभी सांस्कृतिक परिवर्तन और भाषा लिपि की भी उत्पत्ति हुई। जिसने न केवल राज दरबारों में सरकारी कार्यों में और जंनाचलों में अपना स्थान बनाया बल्कि एक मुखर और व्याकरण सम्मत स्वरूप में स्वयं को विकसित किया । यहां हम विंध्य में बोली जाने वाली बघेलखंडी भाषा की ऐसी ही लिपि कैथी के बारे में चर्चा करेंगे ,जो सर्व स्वीकार्यता ना मिलने के कारण अपने अस्तित्व को खो रही है। जिसके अस्तित्व की रक्षा करना हमारा परम कर्तव्य है।

कुंजी शब्द- लिपि,कैथी,बघेलखन्ड, सांस्कृतिक, धरोहर।

प्रस्तावना- आज स्वतंत्र भारत में बहुत ही कम भारतीय इस बात को जानते होंगे कि कैथी हमारी प्राचीन लिपि है जो मध्यकालीन भारत की प्रमुख लिपि थी जो जनप्रिय होने के बाद भी उपेक्षित रही जिसकी प्राचीनता एवं जनप्रियता किसी से छिपी नहीं है लिपि एक भाषा को सुंदर आकार देने का माध्यम होती है जो विचारों की संवाहक भी होती है भारत के पूर्वांचल और पूर्वोत्तर अंचल की भाषाएं मूल रूप से देवनागरी लिपि में लिखी जाती है जिन्हें

स्वतंत्र भाषा के रूप में संविधान में मान्यता मिली है जबकि भारतवर्ष की कई लिपियां है जिनमें मात्र भाषा संस्कृत है लेकिन लिपि भिन्न है तब भी वे पूर्ण भाषा के रूप में स्थान प्राप्त नहीं है वैसी ही लिपि है कैथी । कैथी की वर्तमान स्थिति को देखते हुए कई विद्वानों तथा भाषाशास्त्रियों द्वारा इसकी महत्ता एवं अस्तित्व की रक्षा हेतु प्रयास किए गए । किंतु समय और परिस्थितियों के चलते यह और ही गर्त में चली गई जिसके कारण हमारी यह समृद्ध धरा, श्री राम की पुण्य भूमि ,मां शारदा की नगरी एवं सफेद शेरों के लिए प्रसिद्ध धरा पर अपनी ही भाषा की लिपि को खोजने पर विवश है डॉक्टर ग्रियर्सन द्वारा इस लिपि के बारे में प्रकाश डालते हुए बताया गया कि कैथी लगभग पांचवी से छठवीं शताब्दी के आसपास उत्पन्न रजवाड़ों की लिपि रही है देवनागरी लिपि के समर्थकों की तादाद ज्यादा होने के कारण यह विरोध का शिकार हो गई और इसका अस्तित्व संकट में पड़ गया।

उत्पत्ति एवं इतिहास: हमारी सबसे प्राचीन लिपि है ।ब्राह्मी लिपि ।भारत की द्रविड़ लिपियों को छोड़कर समस्त लिपियों की दादी है ब्राह्मी लिपि । डॉ भोलानाथ तिवारी के अनुसार- भारत की प्राचीन लिपि ब्राह्मण का प्रयोग पांचवी सदी ईसा पूर्व से लेकर लगभग 350 ईसवी तक होता रहा इसके बाद उत्तरी और दक्षिणी शैलियों का विकास हुआ। उत्तरी शैली से चौथी सदी में गुप्त लिपि का विकास हुआ और पांचवी सदी के बाद गुप्त लिपि से कुटिल लिपि का विकास हुआ। डॉक्टर उदय नारायण तिवारी जी के अनुसार कुटिलिटी ही कैथी लिपि की जननी है। कैथी लिपि कायस्थ समाज की पारंपरिक लिपि थी अतः कायस्थी भी कहलाए। कैथी की उत्पत्ति कायस्थ शब्द से मानी जाती है जो उत्तर भारत का एक सामाजिक हिंदू जाति समूह है । इसका प्रयोग कायस्थ जिनका कार्य व्यवसाय करना था के द्वारा व्यवसायिक लेखा-जोखा रखने हेतु किया जाता था। इससे कयथी या कायस्थ ही नाम से भी जाना जाता है यह एक पुरानी लिपि है 'कायस्थ' जिसका संस्कृत में अर्थ होता है। लेखक इसका प्रयोग 16 वीं सदी के आसपास प्रचुर मात्रा में होता था। यह ब्रिटिश काल में भी रजवाड़ों की भाषा हुआ करती थी ।18 80 के दशक में ब्रिटिश शासन ब्रिटिश राज के दौरान इसे प्राचीन बिहार के न्यायालयों में आधिकारिक भाषा का दर्जा दिया गया था। तथा इसे खगड़िया जिले के न्यायालय में वैधानिक लिपि का दर्जा दिया गया था ।कैथी लिपि कम से कम 16 वीं शताब्दी से भोजपुरी भक्ति उर्दू अवधि बघेली मैथिली बंगाली और कई भाषाओं को लिखने के लिए इस्तेमाल की जाने लगी बीसवीं सदी की शुरूआत तक गति का व्यापक प्रयोग होता था ।लेकिन धीरे-धीरे इसका स्थान देवनागरी ने ले लिया जबकि , ग्रामीण अंचलों में अभी भी पत्राचार में कैथी का इस्तेमाल किया जाता है।

बघेली भाषा का इतिहास: बघेली भाषा शास्त्र की नजर में मध्यप्रदेश में 8 गोलियों के समुदाय समुदाय को हिंदी कहकर पुकारा जाता था। जिसमें खड़ी बोली, बांगर, ब्रज कन्नौजी, बुंदेली, को भाषा सर्वे के अनुसार पश्चिमी हिंदी नाम दिया गया है और बची हुई 3 बोलियां जिसमें अवधी बघेली और छत्तीसगढ़ी को पूर्वी हिंदी कहा जाता था। सन 1940 में डॉक्टर धीरेंद्र वर्मा द्वारा प्रकाशित की गई पुस्तक 'हिंदी भाषा का इतिहास ' के अनुसार अवधि के दक्षिण में

बघेली का क्षेत्र है उसका केंद्र रीवा राज्य है किंतु या मध्य प्रांत के दमोह, जबलपुर ,मंडला, बालाघाट जिलों तक फैली है जबकि यह बांदा वह जालौन तक भी फैली हुई थी । 10 वीं शताब्दी के 'सती शिलालेख' में रीवॉ का नाम रीमॉ नाम से प्रमाणित होता है । यह लगभग 1000 वर्ष पुराना है। इतिहास पर नजर डालें तो तेरा भी वह चौदहवीं शताब्दी में लमाना व्यापारियों द्वारा इसे रीमा मंडी के नाम से प्रख्यात किया गया था। जिसे बाद में राजा विक्रमादित्य द्वारा गढ़ियों एवं परकोटो का निर्माण कर के प्रसिद्ध एवं प्रसारित किया गया। सन 1605 में बघेल राजा विक्रमादित्य द्वारा 18 परगने की रीमा मुकुंदपुर जागीर की स्थापना की गई थी। तथा करीब सन 1948 तक इनकी पीढ़ियां बदलती रही और फिर नौवीं पीढ़ी के महाराजा रघुराज सिंह के शासनकाल में बघेलखंड शब्द 18 68 से प्रचलन में आया और तब सतना शहर में बघेलखंड नाम की पॉलिटिकल एजेंसी की स्थापना हुई। और तभी सर अब्राहम ग्रियर्सन को भारतीय भाषा सर्वे कार्य सौंपा गया जिन्होंने सन उन्नीस सौ चार में अपनी रिपोर्ट लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इंडिया के नाम से प्रकार प्रकाशित की जिसमें उन्होंने बघेलखंड की बोली जाने वाली बोली का नाम छपा था। । बघेली और तब से लोगों के बीच बघेलखंड की बोली बघेली के रूप में जाने जाने लगी किंतु किंतु इस समय ब्रिटिश इंडिया गवर्नमेंट की सरकार

कैथी की विशेषताएं : कैथी लिपि की लेखन प्रणाली को अबु गिडा या सिलेबिक वर्णमाला के अनुसार लिखा जाता है यह क्षैतिज रेखाओं में बाएं से दाएं लेखन की जाती है ।व्यंजन के अक्षरों में ईश्वर जुड़ा हुआ होता है। जिसे विशेषज्ञ मात्रा के माध्यम से बदला या शांत किया जा सकता है ।स्वरों को स्वतंत्र अक्षरों के रूप में लिखा जा सकता है। या विशेषक चिन्हों का उपयोग करके जो व्यंजन के ऊपर नीचे या पहले बाद में लिखे जाते हैं। इस लिपि द्वारा बघेली भोजपुरी मगदी उर्दू अवधि मैथिली बंगाली भाषा को लिखा जाता है।

कैथी लिपि का विरोध: बीसवीं सदी के आरंभ में उत्तर भारत के सभी विद्वत जनों ने कैथी लिपि का विरोध किया । समाचार पत्रों ने भी इसका विरोध प्रकाशन में कोई कसर नहीं छोड़ी और खूब आलोचना प्रकाशन किया। यहां तक की डॉक्टर राजेंद्र प्रसाद भी इसमें इससे अछूते नहीं रहे और उन्होंने भी 21 दिसंबर 1912 ईस्वी को एक प्रस्ताव सरकार के समक्ष प्रस्तुत किया। जिसमें सभी सरकारी कार्य कैथी लिपि के स्थान पर देवनागरी लिपि में छापने की प्रार्थना की ।जिस पर 1913 ईस्वी में सरकार द्वारा हिंदी भाषा में प्रकाशित पाठ्य पुस्तकों को देवनागरी लिपि की स्वीकार्यता हो गई। किंतु यह कानून विभाग में लागू नहीं हुआ कई आंदोलन चले और फिर कैथी को स्थान स्थानांतरित कर देवनागरी लिपि ने कब्जा जमा लिया। जो आज भी अनवरत है।

निष्कर्ष: कैथी लिपि को कभी-कभी बिहारी लिपि भी कहा जाता है ।अभी भी बिहार एवं उत्तर प्रदेश उत्तर भारत में अनेकों अभिलेख हैं। जो लिपि के ज्ञान के, अभाव में अपना अस्तित्व खो रहे हैं। अतः आवश्यकता है ,इस लिपि को सहेजने की, आने वाली पीढ़ी तक स्थानांतरित करने की, जिससे विंध्य की ऐतिहासिक व सांस्कृतिक विरासत की

रक्षा की जा सके। कैथी लिपि के प्रति सरकारी उदासीनता के कारण ही प्रदेश के गौरवपूर्ण इतिहास से नागरिक अनजान है। इसके बिना संपूर्ण उत्तर भारत की लोक संस्कृति , लोक संस्कार और लोक इतिहास को जानना संभव नहीं हो सकेगा । विंध्य का गौरव और वैभव इतिहास के पन्नों में कहीं खो जाएगा ।अतः हम सबको मिल जुलकर जागरूक होने की आवश्यकता है।

संदर्भ ग्रंथ:

1. शुक्ला ,भगवती प्रसाद (1972) : बघेली भाषा और साहित्य इलाहाबाद साहित्य भवन लिमिटेड।
2. शुक्ला, हीरालाल बघेली : स्वरों का विपरीत वितरण आलोक प्रकाशन 1969 रायपुर
3. पाठक, आर एस : द पॉलिटिक्स ऑफ बघेली फोनेटिक एंड फोनोलॉजिकल स्टडी ऑफ और डायरेक्ट ऑफ हिंदी नई दिल्ली नेशनल पवहाउस ।
4. कुमार , ध्रुव : कैथी लिपि एक परिचय कंपू टेक्नोलॉजी फर्स्ट वॉल्यूम जनवरी 2019।